परंपरा व आधुनिकता के मिलन से सुलझा जल संकट

भारत डोगरा

सांभर झील में एक बड़े क्षेत्र के लिए नमक बनता है। पहले झील के आस-पास के एक-दो कि.मी. तक ही नमक बनता था, अब दस कि.मी. दूर तक भी नमक बनने लगा है। यह नमक तो दूर-दूर पहुंचने लगा, पर आसपास के अजमेर व नागौर ज़िलों के गांवों में पानी के खारेपन की समस्या बढ़ने लगी। सही गुणवत्ता का पेयजल खरीद कर पीना बहुत महंगा पड़ने लगा। पेयजल की कमी के कारण कई दलित गरीब लोगों की तो बस्तियां ही उजड़ने लगीं।

इस स्थिति में इस क्षेत्र में विविध तरह के सार्थक कार्यों में जुटी संस्था मंथन ने गांववासियों के सहयोग से जल-संकट दूर करने के अनेक सफल प्रयास किए हैं जिनसे इस उपेक्षित ग्रामीण क्षेत्र को राहत मिली है।

इस अभियान को आरंभ से ही गांववासियों की भागीदारी से चलाया गया और उन्होंने जल संरक्षण-संग्रहण के परंपरागत तौर-तरीकों को सीखने की चेष्टा की। जिन परंपरागत जल-स्रोतों ने इन गांवों की प्यास बुझाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था, जैसे धीरा तालाब, कोटड़ी गांव के तालाब का कुंआ, सांभर माला के मंदिर का टांका आदि उनकी उपयोगिता से मंथन ने अपने कार्य के लिए सबक लिए। साथ ही पारदर्शिता से कार्य करने, उचित मज़दूरी समय पर देने का ध्यान रखा। गांववासियों ने कुछ श्रमदान भी किया।

अनेक नाड़ियों, तालाबों के निर्माण से जहां अब कुछ गांवों को अनेक महीने तक पानी मिल जाता है, वहां बहते पानी के नाड़ी में जमा होने से मिट्टी के कटाव की समस्या भी कम होती है। प्यासे मनुष्यों के साथ जीव-जंतुओं, पक्षियों को भी राहत मिली है। नाड़ी का पानी रिचार्ज होने से आस-पास की भूमि में नमी आ जाती है, कुछ हरियाली पनपने लगती है। हैंडपंप व कुंओं का जलस्तर बढ़ जाता है।

पनेर गांव में महिला समूह के प्रस्ताव पर समदलिया नाड़ी बनाई गई। यहां 82 हज़ार रुपए खर्च करके जो नाड़ी बनाई गई उसमें 70 लोगों को मज़दूरी मिली व लगभग 5 महीने के लिए लगभग एक सौ परिवारों को व लगभग 500 पशुओं को पानी मिल जाता है। पास के कुंओं का जल-स्तर भी उठा है व आस-पास पेड़-पौधे भी पनपे हैं।

करडाला गांव की एकमात्र नाड़ी टूट गई थी व कुछ लोगों ने इस भूमि पर अतिक्रमण भी कर लिया था। गांववासियों व मंथन के सहयोग से पहले इस अतिक्रमण को हटा दिया गया। दलित परिवारों की मुख्य भागीदारी से यहां लगभग एक लाख रुपए के बजट से नाड़ी बनवाई गई। यहां बजरी मिट्टी होने से वर्षा के 15 दिन बाद पानी ज़मीन में चला जाता है। इस वजह से जल-स्तर बढ़ गया, ट्यूबवेल सफल हो गया। 150 परिवारों के गांव को पानी मिलने लगा।

बालाजी की ढाणी में फुटियाल नाड़ी 42000 रुपए की लागत से बनाई गई। इससे बहुत से नमक मज़दूरों और भेड़ चराने वालों की प्यास बुझती है।

सामली ढाणी में बनाई ईटावाली नाड़ी से तीन ढाणियों के लगभग 60 परिवारों विशेषकर पशुपालक परिवारों को पानी मिलता है। इस तरह अनेक अन्य नाड़ियां भी गांववासियों, विशेषकर निर्धन कमज़ोर वर्ग के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुई हैं और साथ ही इन्होंने जंगली जीव-जंतुओं की प्यास बुझाने में भी मदद की है।

कोटडी गांव के तालाब के दो कुंओं का पानी बहुत समय से पेयजल के लिए उपयोग होता रहा, पर धीरे-धीरे यह कुंए मिट्टी से भर गए। इन कुंओं से मिट्टी निकालकर

इन्हें साफ किया गया। इसका अच्छा असर ट्यूबवेल से जल उपलब्धि पर भी पड़ा।

वर्षा पानी भंडारण के लिए टांका निर्माण से भी मंथन ने अच्छा कार्य किया है। इस तरह कई स्कूलों में भी पेयजल की कमी दूर की गई है।

अधिक खारा पानी पीने से कोटड़ी गांव के अनेक परिवार कमर दर्द, घुटने के दर्द व अन्य स्वास्थ्य समस्याओं से परेशान थे। यहां सौर ऊर्जा चालित आर.ओ. प्लांट लगने से इन परिवारों को बहुत राहत मिली है। पांचवी कक्षा पास दलित युवक परमाराम ने आर.ओ. प्लांट चलाने का प्रशिक्षण प्राप्त किया व प्रतिदिन सैकड़ों व्यक्तियों को शुद्ध पानी उपलब्ध करवाया।

पास के कुंए से खारा पानी सीमेन्ट से बने टांके में भर दिया जाता है। यह खारा पानी आर.ओ. प्लांट से गुज़रता है। इस संयंत्र में लगा मेमरीन प्रेशर पंप मीठे और खारे पानी को अलग कर देता है। खारा पानी बर्तन साफ करने के लिए प्रयोग होता है। मीठा पानी एक टंकी में चला जाता है व पेयजल के रूप में प्रयोग होता है। ***(स्रोत फीचर्स)***